गोकुल लीला

आ जुओ रे आ जुओ रे आ जुओ रे हो साथ जी,
गोकुल लीला आपणी हो साथ जी।
विध सर्वे कहूं विगते, वृज वस्यो जेणी पेर।
अग्यारे वरस लीला करी, रास रमीने आव्या घेर।। १ ।।

हे साथजी! यह गोकुल की लीला अपनी है। इसे देखो अखण्ड में ब्रज जिस तरह से बसा है उसकी सारी हकीकत विस्तार के साथ कहती हूं। इसमें हमने ग्यारह वर्ष लीला की और फिर रास खेलकर घर आए थे।

गोकुल जमुना त्रट भलो, पुरा बेतालीस वास।
पासे पुरो एक लगतो, ए लीला अखंड विलास।। २ ।।

यमुना तट के किनारे पर गोकुल गांव बयालीस पुरा (गांव) में बसा है। इसके पास में लगता एक पुरा है, जहां अखण्ड विलास की लीला देखी (जहां अखण्ड रास है)।

वास वसती वसे घाटी, त्रण खूंने ना गाम।
कांठे पुरो टीवा ऊपर, उपनंदनो ए ठाम।। ३ ।।

गांव के तीन तरफ आबादी है और एक किनारे पर एक टीला है। जिसके ऊपर उपनन्द के रहने का स्थान है।

पुरा सहु बीजी गमां, वचे वाट धेननो सेर।
इहां रमे वालो सकल मांहें, गोवालो ने घेर।। ४ ।।

बाकी सभी पुरा (गांव) दूसरी तरफ हैं। इन दोनों के बीच में गौओं के आने-जाने का रास्ता है। यहां पर वालाजी सभी ग्वालों के घर में खेलते हैं।

पुरो पटेल सादूलनो, बीजी ते गमां एह।
व्रखभानजी त्रीजी गमां, पुरो दीसे लांबो तेह।। ५ ।।

यह सादूल पटेल का पुरा है जो दूसरी तरफ है। वृषभान तीसरी तरफ है। इनका पुरा लम्बाई में बसा दिखता है।

नंदजीना पुरा सामी, दिस पूरव जमुना त्रट।
छूटक छाया वनस्पति, वृध आडी डालो वट।। ६ ।।

नन्दजी के पुरा के सामने पूर्व दिशा में यमुनाजी का किनारा है। यहां पर थोड़ी-थोड़ी दूरी पर पेड़ लगे हैं। बट के पेड़ की डालें आड़ी-टेढ़ी लगी हैं।

सकल वन सोहामणूं, सोभित जमुना किनार।
अनेक रंगे वेलडी, फल सुगंध सीतल सार।। ७ ।।

सारा वन सुहावना दिखाई देता है। यमुनाजी का किनारा अति सुन्दर है। जहां अनेक रंग की बेलें और फल शीतल सुगन्ध बिखेर रहे हैं।

Nijanand App

नंदजीना पुरा पाखल, पुरा त्रण मामाओ तणा।
ठाट वस्ती आखे पुरा, आप सूरा त्रणे जणा।। ८ ।।

नन्दजी के पुरा के पीछे तीन मामाओं के पुरा हैं। जिन सभी पुरों की आबादी घनी है। तीनों ही मामा शूरवीर हैं।

गांगो चांपो अने जेतो, ए मामा त्रणेना नाम।
दखिण दिस ने पछिम दिस, वीटी बेठा गाम।। ९ ।।

गंगा, चांपा और जेता यह तीनों मामाओं के नाम हैं। जो दक्षिण और पश्चिम दिशा में गांव को घेर कर बैठे हैं।

आठ मंदिर नंदजी तणा, मांडवे एक मंडाण।
पाछल वाडा गौतणा, मांहें आथ सर्वे जाण।। १० ।।

नन्दजी के घर में आठ कमरे हैं और उनके बीच में एक आंगन है। पीछे गौओं का वाड़ा है जिसमें सभी गौएं रहती हैं।

रेत झलके मांडवे, आगल दूध चूलो चरी।
आईजी एणे ठामे बेसे, बेसे सखियो सहु घेरी।। ११ ।।

आंगन में रेत झलकती है और आगे चूल्हों पर दूध उबाला जाता है। आईजी (यशोदाजी) यहां आकर बैठती हैं और सब सखियां उनको घेर कर बैठती हैं।

इहां मंदिर मोदी तेजपालनो, चरी चूला पास।
कोइक दिन आवी रहे, एनों मथुरा मांहें वास।। १२ ।।

यहां पर ही तेजपाल मोदी का कमरा है। चरी चूल्हा के पास हैं। इनका घर मथुरा में है, परन्तु कुछ दिन यहां आकर रहते हैं।

सरूप दस इहां आरोगे, पाक साक अनेक।
भागवंतीबाई भली भांते, रसोई करे विवेक।। १३ ।।

नन्दजी के घर में दस महानुभाव भोजन ग्रहण करते हैं। भागवंतीबाई बड़े प्रेम से रसोई बनाती हैं।

लाडलो नंद जसोमती, रोहिणी बलभद्र बाल।
पालक पुत्र कल्याण जी, तेहेनो ते पुत्र गोपाल।। १४ ।।

नन्दजी का लाला, नन्दजी, यशोदाजी, रोहिणी, बलभद्रजी और पालक पुत्र कल्याणजी (गोद लिया पुत्र) और कल्याणजी के सुपुत्र गोपाल रहते हैं।

बेहेनो बंने जीवा रूपा, भेलियां रहे मोहोलान।
अने बाई भागवंती, नारी घर कल्यान।। १५ ।।

श्री कृष्णजी की दो बहनें जीवा और रूपा साथ में रहती हैं। कल्याणजी की पत्नी भागवंतीबाई, आदि दसों मिलकर रहते हैं।

Nijanand App

पुरो एक वृखभाननो, उत्तर दिस लगतो।
पासे भाई भेलो लखमण, पुरो पूरण वसतो।। १६ ।।

वृषभानजी का पुरा उत्तर की दिशा में है। उनके पास में ही उनके भाई लछमनजी का पुरा बसा है।

सरूप साते भली भांते, आरोगे अंन पाक।
कल्यानबाई रसोई करे, विध विध वघारे साक।। १७ ।।

श्री राधाजी के घर में सात महानुभाव भोजन ग्रहण करते हैं और यहां कल्याणबाई तरह-तरह की छौंक बघारकर (तड़का लगाकर) प्यार से रसोई बनाती हैं।

राधाबाई पिता वृखभानजी, प्रभावती बाई मात।
नान्हों कृष्ण कल्याणजी, तेथी मोटो सिदामो भ्रात।। १८ ।।

राधाजी के पिता श्री वृषभानजी, माता श्री प्रभावतीजी हैं। छोटे भाई का नाम कृष्णजी और कल्याणजी तथा इनसे बड़े भाई श्रीदामा हैं।

नार सिदामा तणी, तेहनी नणद राधाबाई।
जाणी सगाई स्यामनी, अंग धरे ते अति बडाई।। १९ ।।

श्रीदामाजी की पत्नी हैं, जिनकी ननद राधाबाई है। उन राधाजी की सगाई श्यामजी (श्री कृष्णजी) से हुई है। इस कारण से राधाजी को बहुत अभिमान है।

मंदिर छे आगल मांडवे, चूले चढे दूध माट।
राधाबाई खोले प्रभावती, लई बेसे ऊपर खाट।। २० ।।

राधाजी के आंगन में चूल्हों पर मटकों में दूध उबाला जाता है। राधाजी की माता श्री प्रभावतीजी राधाजी को गोदी में लेकर खाट पर बैठती हैं।

राधाबाईनो विवाह कीधूं, पण परण्या नथी प्राणनाथ।
मूल सनमंधे एक अंगे, विलसे वल्लभ साथ।। २१ ।।

श्री राधाजी की सगाई श्री श्यामजी के साथ हो गई है, परन्तु प्राणनाथजी के साथ शादी नहीं हुई (विवाह नहीं हुआ)। पर मूल सम्बन्ध से एक ही अंग है (वह श्यामाजी हैं और वह श्री राजजी हैं)। इस कारण से अपने प्रीतम के साथ विलास करती हैं, आनन्द लेती हैं।

घुरसे गोरस हरखे हेतें, घर घर प्रते थाए।
आंगणे वेलूं उजली, वालो विराजे सहु मांहें।। २२ ।।

बड़ी खुशी के साथ घर-घर में प्रातःकाल दही का मंथन होता है और हर एक आंगन की उजली रेत में सभी के बीच में वालाजी विराजते हैं।

पुरा सघले वचें चौरा, मांहें मेलावा थाय।
चारे पोहोर गोठ घूघरी, रामत करतां जाय।। २३ ।।

पुरा (गांव) के बीच में चौरस्ता है जहां पर मिलन होता है। चार प्रहर दिन में खेलते हैं। घुघरी का भोजन लेते हैं।

Nijanand App

तेजपाल मोदी वलोट पूरे, वृजमां मोटे ठाम।
वस्त वसाणूं सहु लिए, घृत दिए आखू गाम।। २४ ।।

ब्रज में बड़े-बड़े घरों में से तेजपाल मोदी सामान लेते-देते हैं। सारे गांव वाले उसको घी देते हैं और सब सामान उससे लेते हैं।

घोलिया इहां घोल करवा, आवे वृजमां जेह।
वस्त वसाणूं लिए दिए, जई रहे मथुरा तेह।। २५ ।।

मथुरा के व्यापारी अपना-अपना सामान बेचने ब्रज में आते हैं और सामान ले-देकर मथुरा चले जाते हैं।

गोवाला संग रमे वालो, सेर पाणी वाट।
विनोद हांस अमें आवूं जावूं, जल भरवा एणे घाट।। २६ ।।

ग्वालों के साथ वालाजी पनघट के रास्ते में खेलते हैं। जल भरने के वास्ते इस घाट पर हम हंसते खेलते आते-जाते हैं।

विलास वृजमां वालाजीसूं, वरते छे एह वात।
वचन अटपटा वेधे सहुने, अहनिस एहज तात।। २७ ।।

ब्रज में वालाजी के साथ विलास की लीला होती है जिसकी चर्चा दिन-रात होती है। इस बात से दूसरे लोग अटपटे शब्द कहते हैं जो हम सबको चुभते हैं।

रमें प्रेमें प्रीते भीनो, पुरा सघला मांहें।
रमे खिण जेसूं तेहेने बीजो, सूझे नहीं कोई क्यांहें।। २८ ।।

सब पुरा में (गांव में) बड़ी प्रेम भरी मस्ती में खेलते हैं। वह जिसके साथ एक पल भी खेल लेते हैं उसे फिर और कुछ सूझता ही नहीं है।

रामत रंगे अमे वालाजी संगे, रमूं जातां पाणी।
आठो पोहोर अटकी अंगे, एह छब एहज वाणी।। २९ ।।

पानी भरने जाते समय हम वालाजी के साथ बड़ी उमंग के साथ खेलते हैं और उनकी छवि और मीठे वचन आठों प्रहर हमारे अंग में अटके रहते हैं। (याद आती रहती है।)

घर घर आनन्द ओछव, उछरंग अंग न माय।
विनोद हांस वालाजी संगे, अहनिस करतां जाय।। ३० ।।

घर-घर आनन्द उत्सव हो रहा है, जिससे अंग में उमंग नहीं समाती। वालाजी के साथ रात-दिन हंसी मजाक में बीत रहे हैं।

बालक सुंदर बोले मीठूं, केडे करी घेर आणूं।
खिणमां जोवन प्रेमें पूरो, सेजडिए सुख माणूं।। ३१ ।।

बालक स्वरूप मीठी बोली बोलने वाले श्यामसुन्दर को गोपी कमर पर उठाकर घर में ले आती है। वह एक पल में बाल स्वरूप से युवा बन जाते हैं और गोपी को सेज का सुख देते हैं।

Nijanand App

वाछरडा लई वन पधारे, आठमें दसमें दिन।
कहियक गोवरधन फरतां, मांहें रमें ते वारे वन।। ३२ ।।

कभी आठवें या दसवें दिन बछड़ा लेकर वन में जाते हैं, कभी गोवर्धन पर्वत पर फिरते हैं तथा कभी बारह वनों में खेलते हैं।

अखंड लीला रमूं अहनिस, अमें सखियों वालाजीने संग।
पूरे मनोरथ अमतणां, ए सदा नवले रंग।। ३३ ।।

वालाजी के साथ हम सखियां रात-दिन अखण्ड लीला खेलती हैं। वालाजी नित्य ही नए-नए ढंग से खेलकर हमारी चाहना पूरी करते हैं।

श्रीराज पधारया पछी, वृजवधु मथुरा न गई।
कुमारिका संग रामत मिसे, दाणलीला एम थई।। ३४ ।।

श्री राजजी के ब्रज (कृष्ण के तन में) में आने के बाद ब्रज वधुएं मथुरा नहीं गईं। कुमारिकाएं भी खेलने के बहाने से जाती हैं, जिससे दान लीला होती है।

कुमारिका रमे रामत, अभ्यास चीलो कुल तणो।
कुलडा मांहें दूध दधी, रमे वन रंग रस घणो।। ३५ ।।

अपने घर की रीति-रिवाज के अनुसार कुमारिका खेल खेलती हैं। अपने छोटे से बर्तन में दूध दधि लेकर वन में बड़े आनन्द से खेलती हैं।

वृजवधु मांहें रमवा, संग केटलीक जाय।
वालोजी इहां दाण मिसे, मारग आडो थाय।। ३६ ।।

ब्रज की वधुएं के बीच खेलने के लिए कितनी कुमारिकाएं भी खेलने के वास्ते जाती हैं। वालाजी दान का बहाना लेकर (कर चुंगी का फाटक लगाकर) रास्ता रोकते हैं।

दूध दधी माखण ल्यावुं, अमें वालाजीने काज।
ते दधी झूंटी अमतणो, दिए गोवालाने राज।। ३७ ।।

हम गोपियां वालाजी के वास्ते ही दूध, दधि और माखन (मक्खन) लेकर आती हैं। वालाजी हमारा दही छीनकर ग्वालों को बांट देते हैं।

गोवाला नासी जाय अलगां, अमें वलगी राखूं वालो पास।
पछे एकांते अमें वालाजी संगे, करूं वनमां विलास।। ३८ ।।

ग्वाल सब अलग भाग जाते हैं और हम वालाजी के साथ लिपटे रहते हैं। पीछे वालाजी के साथ एकान्त में विलास करते हैं।

त्यारे कुमारिका अम संग रेहेती, अमे वाला संगे रमती।
कुमारिकाओ ने प्रेम उतपन, मूल सनमंध इहां थकी।। ३९ ।।

कुमारिकाएं हमारे साथ रहती हैं और हम वालाजी के साथ खेलती हैं। यह देख-देखकर कुमारिकाओं को प्रेम उत्पन्न हो गया। मूल सम्बन्ध (कुमारिकाओं की) की लीला यहां से शुरू होती है।

Nijanand App

अखंड लीला अहनिस, नित नित नवले रंग।
एणी जोतें सहुए द्रढ थयूं, सखियों वालाजी ने संग।। ४० ।।

रात-दिन अखण्ड लीला नए-नए तरीके के साथ हो रही है। सखियों और वालाजी की लीला को देखकर सब कुमारिकाओं में प्रेम की दृढ़ता आ गई।

नंद जसोदा गोवाल गोपी, धेन वछ जमुना वन।
पसु पंखी थावर जंगम, नित नित लीला नौतन।। ४१ ।।

नन्द, यशोदा, ग्वाल, गोपी, गाय, बछड़ा, यमुना, वन, पशु, पक्षी, चर और अचर सभी नई-नई लीला का आनन्द लेते हैं।

पुरे सघले रमूं अमें, अजवालिए लई ढोल।
वालोजी इहां विनोद करे, ते कह्या न जाए बोल।। ४२ ।।

चांदनी रातों के उजाले में हम सब ढोल बजा-बजाकर सभी पुरों में खेलते हैं। यहां पर खेलते समय वालाजी जो हंसाते हैं, विनोद की लीला करते हैं, वह शब्दों में नहीं कही जा सकती।

उलसे गोकुल गाम आखू, हरख हेत अपार।
धन धान वस्तर भूखण, द्रव्य अखूट भंडार।। ४३ ।।

पूरा गोकुल गांव खुशी और उमंग से भरा हुआ है। इनके घरों में धन, अनाज, वस्त्र और आभूषणों के अखूट (अक्षय) भण्डार भरे पड़े हैं।

विवाह जनम नित प्रते, आखे गाम अनेक होय।
थोडुंक कारज कांइक थाय, तिहां तेडावे सहु कोय।। ४४ ।।

सारे गांव में किसी के यहां जन्म तथा किसी के घर विवाह होता है। थोड़ी-सी भी खुशी का प्रसंग हो तो सारे गांव को निमन्त्रण दिया जाता है।

अनेक बाजंत्र नाटारंभ, धन खरचे अहीर उमंग।
साथ सहु सिणगार करी, अमें आवुं ते अति उछरंग।। ४५ ।।

अहीर लोग खूब धन खर्च करके बाजे बजवाते हैं। नाच होते हैं। हम सब गोपियां भी शृंगार करके बड़ी उमंग से आती हैं।

वलगे वालो विनोदे अमसूं, देखतां सहु जन।
पण विचारे नहीं कोई वांकू, सहु कहे एह निसन।। ४६ ।।

वालाजी सबको देखते हुए बड़ी उमंग के साथ हमसे लिपट जाते हैं, परन्तु कोई भी उलटा नहीं सोचते। सब कहते हैं कि यह तो बच्चा है।

वात एहेनी जाणूं अमें, कां वली जाणे अमारी एह।
मांहेली वात न समझे बीजो, वालाजीनो सनेह।। ४७ ।।

इनकी बात हम जानते हैं और हमारी बात यह जानते हैं। वालाजी के साथ हमारे प्रेम की अन्दरूनी बातों को दूसरा कोई नहीं जानता।

Nijanand App

ए थाय सहु अम कारणे, वालो पूरे मनोरथ मन।
ए समे नी हूं सी कहुं, साथ सहु धंन धंन।।४८।।

यह तो सब हमारे वास्ते होता है। वालाजी हमारे मन की चाहना पूरी करते हैं। इस समय की मैं क्या कहूं? सब धन्य-धन्य हो रहे हैं।

गोकुल आखो कीधूं गेहेलूं, अने वालो तो वचिखिण।
जिहां मलूं तिहां एहज वातो, हांस विनोद रमण।।४९।।

वालाजी ने सारे गोकुल गांव को मस्त बना रखा है। वालाजी तो अलमस्त हैं ही। जहां हम मिलते हैं तो हंसने, आनन्द लेने और खेलने की ही बातें करते हैं।

हवे ए लीला कहूं केटली, अलेखे अति सुख।
वरस अग्यारे वासनाओंसों, प्रेमें रम्या सनमुख।।५०।।

अब इस लीला की कहां तक कहूं? यह बेशुमार (अवर्णनीय) अति सुख की है। ग्यारह वर्ष तक बड़े प्रेम से अपनी आत्माओं के साथ खेले।

एक दिन गौ चारवा, वालो पोहोंता ते वृंदावन।
गोवाला गौ लई वल्या, पछे जोगमाया उतपन।।५१।।

एक दिन गाय चराने के लिए वालाजी वृन्दावन गए। ग्वाल गौएं लेकर वापस लौट आए। इसके बाद योगमाया का बह्माण्ड बना।

कालमायामां रामत, एटला लगे प्रमाण।
ब्रह्मांडनो कल्पांत करी, अखंड कीधो निरवाण।।५२।।

कालमाया का खेल यहीं तक हुआ। उसके बाद ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया और यह लीला अखण्ड हो गई।

सदा लीला जे वृजनी, आ विध कही तेह तणी।
हवे रासनो प्रकास कहुं, ए सोभा अति घणी।।५३।।

सदा ही ब्रज की लीला तरह-तरह से होती है। उसकी हकीकत आपको कही है। अब अखण्ड रास की पहचान कराती हूं। यह शोभा बहुत बड़ी है।

वली जोत झाली नव रहे, बीजो वेधियो आकास।
ततखिण लीधो त्रीजो ब्रह्मांड, जिहां अखंड रजनी रास।।५४।।

अब रास की ज्योति पकड़ी नहीं जा सकती है। यह भी क्षर ब्रह्माण्ड को फोड़कर बेहद में (योग माया) में गई। जहां तीसरे ब्रह्माण्ड की रचना कर केवल ब्रह्म में अखण्ड रास की लीला की।

जिनस जुगत कहूं केटली, अलेखे सुख अखंड।
जोगमायाए नवो निपायो, कोई सुख सरूपी ब्रह्मांड।।५५।।

अब इस रास की लीला का वर्णन कहां तक करूं? इसके सुख बेशुमार हैं और अखण्ड हैं। श्री राजजी महाराज ने योगमाया के ब्रह्माण्ड में नया वृन्दावन बनाया जो सुख का ही रूप है।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। २९५ ।।

Nijanand App